International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 02(II), April - June, 2022, pp. 54-60

भारतीय विदेश नीति निरन्तरता एवं परिवर्तन

डॉ. ललिता शर्मा*

प्रस्तावना

किसी भी देश की विदेश नीति उसके राष्ट्रीय अनुभव का परिणाम होती हैं, वह चाहे ऐतिहासिक हो या वर्तमान युग का और बराबर बदलती हुई परिस्थितियों और अन्तराष्ट्रीय क्षेत्र की विचारधाराओं अन्योन्य प्रतिक्रियाओं से उभरती हैं। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में इस अन्योन्य क्रिया को आंकने का मूल तत्व तो वहीं रहते हैं परन्तु कई बार बदलती हुई परिस्थितियों और नई परिस्थितियों के विशेष तत्वों के कारण एक ऐसे नए तत्व का समावेश करना आवश्यक हो जाता है जो नया परिवर्तन लाए।

विदेशी नीति का उद्देश्य मात्र दूसरे के व्यवहार का परिवर्तन करना नहीं होता अपितु इसके माध्यम से दूसरे माध्यम से दूसरे राज्यों को गतिविधियों का नियन्त्रण करना भी होता है। इस प्रकार विदेश नीति में परिवर्तन के साथ–साथ कई बार निरन्तरता की भी आवश्यकता होती हैं, क्योंकि विदेश नीति परिवर्तन व यथा स्थिति दोनों प्रकार की नीतियों का समन्वय होती हैं। इस प्रकार विदेश नीति के सकारात्मक व नकारात्मक दोनों पहलू होते हैं।

भारत की स्वतंत्रता से लेकर आज तक भारत की विदेश नीति सभी देशों के साथ मित्रता के सेतु बांधने तथा सहयोग करने की नीति रही हैं इसने भारत की राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित रखने के साथ–साथ अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति तथा सुरक्षा को उन्नत करने राष्ट्रों के आपस में न्यायपूर्ण तथा सम्मानजनक सम्बन्धों को बनाये रखने तथा अन्तर्राष्ट्रीय कानून के सम्मान तथा सन्धि उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न करने का प्रयत्न किया है। समय के साथ परमाणु हथियारों की बढ़ती होड़ शीतयुद्ध से अलगाव, महाशक्तियों से संबंध रंग भेद का विरोध, साम्राज्यवाद व उपनिवेशवाद का विरोध आदि कुछ परिस्थितियाँ रही जिसके कारण से विदेश नीति में बदवाल की स्थिति भी सामने आई। इस प्रकार भारत भी विदेश नीति में निरन्तरता व परिवर्तन से अछुता नहीं रहा। परिवर्तन प्रकृति का नियम है जो सभी मत–मतान्तरों विचारधारों और धारणाओं से ऊपर होता है।[1]

भारतीय विदेश नीति निरन्तरता व परिवर्तन के विभिन्न चरण

- **पं. जवाहर लाल नेहरू के अधीन भारत की विदेश नीति–सिद्धान्त व व्यवहार का टकराव**

भारत की विदेश नीति मुख्यतः जवाहरलाल नेहरू के द्वारा निर्मित मानी जाती है उन्हें लगभग सत्रह वर्ष तक भारत के प्रधानमंत्री व विदेश मंत्री के रूप में नीति के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। 7 सितम्बर 1946 को उन्होंने भारतीय विदेश नीति के मूल तत्वों का उल्लेख अपने भाषण में कर दिया था। ''परतंत्र देशों तथा व्यक्तियों की स्वतंत्रता सभी लोगों के लिए समान अवसरों के सिद्धान्त को मान्यता शक्ति राजनीति से तथा गुटों से अलग रहने की नीति विश्व युद्ध से बचने के प्रयास तथा एक ऐसे विश्व राष्ट्रमण्डल का निर्माण जिसमें स्वतंत्र लोग स्वेच्छा से सहयोग करें तथा कोई किसी का शोषण नहीं करे भारत की विदेश नीति के मुख्य उद्देश्य होंगे।[2]''

* पोस्टडॉक्टोरल फैलो, आईसीएसएसआर, नई दिल्ली।

विश्व दो ध्रुवों में बंट चुका था इसलिए नेहरू जी ने गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई ताकि भारत स्वतन्त्र रूप से अपना विकास कर सके। 15 अगस्त 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद गुटनिरपेक्षता एवं पंचशील भारतीय विदेश नीति के आधार बने जो राष्ट्रीय हितों पर आधारित थे। भारत को अपनी गुटनिरपेक्षता नीति वास्तविक प्रयोग का अवसर जून 1950 के कोरिया युद्ध में मिला। पं. नेहरू दक्षिण–पूर्व एशिया में सामूहिक शान्ति स्थापित करने के पक्ष में थे। उन्होंने 25 अगस्त 1954 में लोकसभा में दिये गये अपने वक्तव्य में कहा था कि एशियाई समस्याओं के समाधान के लिए यह जरूरी हैं कि आधुनिक विश्व में एशिया के स्थान को मान्यता दी जाये।[3]

पंचशील की राजनयिक रणनीति भारतीय राष्ट्रीय हितों की यर्थातवादी कसौटी पर खरी उतरी हैं। सैनिक व आर्थिक उपकरणों के अभाव में यदि बांडुग सम्मेलन (1955) के अवसर पर नेहरू जी ने भारत को अद्भुत प्रतिष्ठा दिलाई थी जो उसके आधार में पंचशील की सफलता ही थीं

गुटनिरपेक्षता की नीति अन्तराष्ट्रीय राजनीति में एक सकारात्मक बहुआयामी विचारधारा है। जिसमें प्रत्येक स्थिति पर सत्य के आधार पर निर्णय लिया जाता है। कोई भी विचारधारा या दर्शन कोई भी नीति या सिद्धान्त इस निरन्तर बदलते विश्व में जीवित नहीं रह सकते। चाहे वह स्थिर या रूढ़िवादी हो चाहे वो पूंजीवादी हो या गुटनिरपेक्ष।[4]

नेहरू जी ने देश में सुरक्षा सेवाओं की बढ़ोतरी की अपेक्षा विश्व के अन्य देशो से मैत्री सम्बन्ध बढ़ाने पर जोर दिया। संयुक्त राष्ट्र संघ के शान्ति सम्बन्धी कार्यों में भारत ने बहुत सहायता दी हैं। कांगो व गांजा में संयुक्त राष्ट्र संघ के लिए सेना की टुकड़ियाँ भेजी थी। भारत ने संयुक्त राष्ट्र में लीबिया टयूनिश, मलाया, हिन्द–चीन, गोल्ड कास्ट, अल्जीरिया आदि की स्वतन्त्रता का भी भारत ने मजबूत समर्थन किया था। भारत की विदेश नीति की प्रशंसा न केवल अमेरिकी गुट ने ही की बल्कि सोवियत रूस गुट ने भी इसे काफी सराहा। इस समय पड़ौसी देशों के साथ हमारी विदेश नीति काफी सफल रही हैं,

- **लाल बहादुर शास्त्री कालीन भारतीय विदेश नीति**

जब सामान्य व्यक्तित्व के प्रतीक लाल बहादुर शास्त्री ने भारत के प्रद्यानमंत्री की बागडोर सम्भाली तब अन्तर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय परिदृश्य पर कई गम्भीर चुनौतियाँ उनके समक्ष थी। शास्त्री जी ने सन् 1964 में भारतीय मूल के तमिलों के सम्बन्ध में एक समझौता किया। इसके भी आगे जाकर भारत ने नेपाल को पूर्ण सम्प्रभु राज्य के रूप में मान्यता प्रदान की। इसलिए शास्त्री जी ने विदेश नीति में खोए हुए सम्मान को पुनः प्राप्त करने के लिए पड़ौसी देशों से मैत्री पर विशेष बल दिया। शास्त्री युग की विदेश नीति निः सन्देह यथार्थवादी रूझान लिए हुए थी। । 1965 की भारत–पाक युद्ध में भारत की विजय ने सन् 1962 के घाव को भरने का काम शास्त्री जी ने अपने छोटे से कार्यकाल में बखूबी से पूर्ण किया और 1966 में पाकिस्तान के साथ युद्ध में शास्त्री जी ने यह स्पष्ट किया कि वह शान्तिप्रिय और शान्ति पूर्व सह–अस्तित्व के नाम पर भारतीय राष्ट्रीय हित की बली देने के लिए तैयार नहीं हैं।

- **इन्दिरा गांधी कालीन भारतीय विदेश नीति बदला परिपेक्ष्य**

लाल बहादुर शास्त्री की उत्तराधिकारी श्रीमती इन्दिरा गांधी ने समय की चुनौतियों का सामना करने में सराहनीय कौशल और राजनीतिक परिपक्वता का परिचय दिया[5] । 9 अगस्त 1971 को सोवियत संघ के साथ शान्ति मित्रता और सहयोग की बीस वर्षीय सन्धि करके भारत को राजनयिक अकेलेपन से उबार लिया। दिसम्बर 1971 में भारत–पाक युद्ध 14 दिन चला और उसका अन्त भारत की शानदार विजय पाकिस्तान की अप्रतिम पराजय तथा बांग्लादेश के अभ्युदय के रूप में हुआ। यह श्रीमती इन्दिरा गांधी की राजनीतिक सोच का ही परिणाम था। शिमला समझौते में द्विपक्षीय नीति को अपनाया गया 1974 में पोखरण परमाणु विस्फोट अेर 1975 में सिक्किम का भारत में विलय बदलते हुए परिवर्तन के संकेत रहे। इनके काल में विदेश नीति में निरन्तरता के स्थान पर परिवर्तन ही नजर आया।

- **जनता सरकार (मोरारजी देसाई) काल में भारती की विदेश नीति निरन्तरता और परिवर्तन**

मार्च 1977 ई. में श्रीमती इन्दिरा गांधी और उनकी पार्टी की पराजय के बाद देश में वयोवृद्ध तथा वरिष्ठ नेता श्री मोरारजी देसाई जनता पार्टी के नेतृत्व में देश के प्रधानमंत्री बनें। अटल बिहारी वाजपेयी (विदेश मंत्री) ने पड़ौसी देशों के साथ सम्बन्धों के क्षेत्र में जरूरत से ज्यादा रियायती व नरम रूख अपनाया क्योंकि वाजपेयी की अब तक की छवि 'आक्रामक' हिन्दु राष्ट्रवादी वाली थी। अटल बिहारी वाजपेयी ने इस विदेश नीति को निरन्तरता एवं बदलाव के साथ राष्ट्रीय सहमति की विदेश नीति कहा।[6]

सभी देशों के साथ समानता और पारस्परिकता के आधार पर मैत्री सम्बन्धों को दृढ़ करने की दिशा में जनता सरकार आगे बढ़ रही थी। भारत नेपाल सम्बन्धों में जहां शिथिलता चल रही थी वह वाजपेयी की नेपाल यात्रा से मधुरता में बदली।अफगानिस्तान व बर्मा के साथ भी सम्बन्धों को बढ़ाने से नये क्षितिज का जन्म हुआ। 22 जून 1978 को भारत इण्डोनेशिया और थाइलैण्ड ने एक त्रिशक्ति समझौते पर हस्ताक्षर किये जिसके द्वारा अण्डमान सागर में समुद्री सतह के सम्बन्ध में स्थायी रूप से सीमा निर्धारण कर दिया गया।भारत ने दक्षिण अफ्रीका में रगंभेद नीति के विरूद्ध जो संघर्ष चला उसका शान्तिपूर्ण ढंग से समाधान के प्रयास के किए। भारत ने महाशक्तियों से ही नहीं अपितु पड़ौसी देशों के साथ सम्बन्ध सुधारने का प्रयास किया इस दृष्टि से फरवरी 1978 में वाजपेयी ने इस्लामाबाद की यात्रा की और बांग्लादेश के साथ फरक्का समझौते पर हस्ताक्षर किए।

जनता सरकार अपने से पूर्व सरकारों की भाँति राष्ट्रीय स्वतन्त्रता व निर्माण की स्वतन्त्रता को बनाए रखना चाहती थीं।

काग्रेंस के समर्थन से चौधरीचरण सिंह 28 जुलाई 1979 से 10 जनवरी 1980 तक देश के कार्यवाहक प्रधानमंत्री रहे। जिस विषय पर प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह ने स्पष्ट दृष्टिकोण अपनाया वह था सोवियत हस्तक्षेप। उनके समय में भी विदेश नीति में किसी प्रकार का बदलाव नहीं किया गया।

- **श्रीमती इन्दिरा गाँधी की वापसी और भारत की विदेश नीति**

श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने 1977 में विदेशनीति जहाँ पर छोड़ी थी वहीं से लेकर विदेशनीति का विकास किया। उन्होंने जनता पार्टी के आदर्शवाद को त्याग फिर से यथार्थवाद को अपना लिया ताकि भारत दक्षिण एशिया की सर्वोच्च शक्ति बने और इसे मान्यता मिले जिससे इस क्षेत्र में शान्ति सुरक्षा की स्थापना हो सकें। इस युग में उन्होंने गुटनिरपेक्ष की तरफ अधिक ध्यान दिया। 1980 में अफगानिस्तान में सोवियत संघ के हस्तक्षेप ने भारत को शीतयुद्ध के कगार पर पहुँचा दिया। लेकिन श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए अफगानिस्तान में सोवियत हस्तक्षेप की नीति को विदेश नीति में सन्तुलन करके भारत को शीत युद्ध के कगार से बाहर निकाल ले जाने में सफल हो गई। उन्होंने 1982 में सोवियत संघ की यात्रा की जिसके सम्बन्धों में मधुरता व प्रगाढ़ता आयी। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत ने अमेरिका से संबंध सुधारने की प्रयास किये। सातवां गुटनिरपेक्ष सम्मेलन 7 मार्च से 11 मार्च 1983 तक नई दिल्ली में आयोजित हुआ। संयुक्त राष्ट्रसंघ के 38वें अधिवेशन में भी निः शस्त्रीकरण तथा अन्तर्राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था के लिए अन्तर्राष्ट्रीय चेतना जगाने के लिए निःशस्त्रीकरण को निर्भीक उपक्रम बताया।[7] अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को बढ़ाने के लिए विदेश नीति में खेलों के माध्यम से एक नया तत्व जोड़ा। भारतीय विदेश नीति में परिवर्तनता की स्पष्ट झलक दिखाई दी।

- **राजीव गाँधी के काल में अधीन भारत की विदेश नीति**

श्रीमती इन्दिरा गाँधी की हत्या के बाद 1984 में राजीव गाँधी भारत के प्रधानमंत्री बने। प्रधानमंत्री बनने पर राजीव गाँधी ने राजनीतिक यात्रा की कूटनीति अपनाई और विश्व के अनेक नेताओं के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित किए। उन्होंने अपने शासन के प्रथम चार वर्षों में 48 विदेश यात्राएँ की। राजीव गाँधी भारत को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के आधुनिकीकरण के माध्यम से 21 वीं सदी में अग्रणी राष्ट्रों की पंक्ति में ले जाना चाहते थे इसके लिए उन्होंने विश्व निःशस्त्रीकरण की दिशा में भारत की और से संयुक्त राष्ट्र तथा अन्य मंचों पर इसकी पहल की।

यद्यपि उनके नेतृत्व में भारत की विदेश नीति में कोई मौलिक परिवर्तन नहीं आया। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका व नामीबिया में रंगभेद नीति के खिलाफ संतत संघर्ष को समर्थन देने की भारत की प्रतिबद्वता को दोहराया। राजीव गाँधी ने विश्व निःशस्त्रीकरण के मुद्दों को संयुक्त राष्ट्र महासभा के माध्यम से उठाया। हिन्द महासागर को शान्ति क्षेत्र घोषित करने के मामले में भी राजीव गाँधी ने जोर दिया। 4–6 मई 1988 में अफगानिस्तान के शरणार्थियों की सहायता के लिए 10 करोड़ रूपये की भारतीय मदद की घोषणा की जिसका अफगान सरकार ने स्वागत किया।[8] राजीव गाँधी ने दक्षिण एशिया में भारत का वर्चस्व स्थापित करने की चेष्टा की। उनकी विदेश नीति में निरन्तरता ही रही लेकिन बदलाव व परिवर्तन के प्रयास अवसर नजर आये।

- **राष्ट्रीय मोर्चे की अल्पमत सरकार की विदेश नीति (1989–90)**

राष्ट्रीय मोर्चे की अल्पमत सरकार के दो प्रधानमंत्रियों श्री वी. पी. सिंह की सरकार (1 दिसम्बर, 1989 से 10 नवम्बर, 1990 तक) और चन्द्रशेखर की सरकार (10 नवम्बर, 1990 से 21 जून, 1991 तक) अत्यन्त अल्प अवधि के लिए सत्ता में रही।श्री वी.पी. सिंह के कार्यकाल में एक प्रमुख प्रयास श्रीलंका के साथ सम्बन्ध सुधारने के लिए किया गया। चन्द्रशेखर के प्रधानमंत्रित्व काल में बांग्लादेश के साथ सम्बन्ध सुधारने का प्रयास किया गया। राष्ट्रीय मोर्चे की सरकारें के अंतर्गत नेपाल के साथ भी सम्बन्ध सुधारने के प्रयास किये गये तथा व्यापार और पारगमन की अलग–अलग सन्धियां स्वीकार कर ली गई।

- **पी.वी. नरसिम्हा राव काल में भारतीय विदेश नीति**

जून 1991 में श्री पी. वी. नरसिम्हा राव देश के प्रधानमंत्री बने। नरसिम्हा राव के प्रधानमंत्री पद ग्रहण करने के बाद उन्हें विदेश नीति के मोर्चे पर कोई महत्त्वपूर्ण राजनयिक कौशल दिखाने का समय नहीं मिला क्योंकि 1990 का दशक एक परिवर्तनकारी दशक था जिससे अनेक युगान्तकारी घटनाएँ घटित हुई। भारत के मित्र सोवियत संघ का ह्रास तीसरी दुनिया की एकता का क्षय अमेरिका का बढ़ता वर्चस्व और यूरोपीय शक्ति के उदय के बाद भारत के सामने चुनौतियाँ खड़ी थी। जहाँ एक और आर्थिक संकट मुंह बांये खड़ा था वही बढ़ता आतंकवाद एक चुनौती थी। जिससे नरसिम्हा राव का सारा ध्यान इन्हीं मसलों की और बंटा रहा। विश्व पर्यावरण की सुरक्षा को देखते हुए जून 1992 में भारत ने पृथ्वी शिखर सम्मेलन में हिस्सा लिया। जिससे अमेरिका, चीन, जापान तथा यूरोपीय अफ्रीका एशियाई तथा लेटिन अमेरिका के देशों के साथ भारत के सम्बन्ध अच्छे हुए। भारत ने तीसरे विश्व के देशों के साथ सामाजिक, आर्थिक, व्यापारिक तथा सास्कृतिक सहयोग स्थापित करने की और रचनात्मक कदम उठाए। अरब व इजराइल के साथ पूर्ण कूटनीतिक सम्बन्धों की स्थापना की। सोवियत संघ के स्वतन्त्र गणराज्यों विशेषकर रूस के साथ सम्बन्धों को विकसित करना, नेपाल, भूटान, बांगलादेश, तथा दक्षिण एशियाई ईरान तथा केन्द्रीय एशियाई तथा पश्चिमी एशियाई देशों के साथ सम्बन्धों को विकसित करना राव सरकार शासन में भारतीय विदेश नीति में निरन्तरता के साथ–साथ परिवर्तनशीलता को प्रकट करते हैं।

- **देवगौड़ा सरकार काल में भारत की विदेश नीति**

जून 1996 को तेरह दलों की एक साझा सरकार ने एच. डी. देवगौड़ा प्रधानमंत्री बने। देवगौड़ा ने भी नेहरू द्वारा प्रतिपादित विदेश नीति का अनुसरण किया और विदेश मंत्री इन्द्र कुमार गुजराल ने पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्धों में सुधार लाने को प्राथमिकता दी। साथ ही इन्द्र कुमार गुजराल ने एक नये सिद्धान्त का प्रतिपादन किया जिसे ''गुजराल सिद्धान्त'' के नाम से जाना जाता है। लेकिन वे सफल नहीं हो पाये। देवगौड़ा शासन काल में नेहरू कालीन व इन्दिरा गाँधी कालीन भारतीय विदेश नीति का ही समावेश रहा अतः निरन्तरता ही बनी रहीं।

- **गुजराल सरकार की विदेश नीति**

केन्द्र में राजनीतिक उठा पटक के कारण सरकारों के बदलने का सिलसिला जारी रहा। 1997 में इन्द्र कुमार गुजराल प्रधानमंत्री बने। उनका मानना था कि भारत सदैव वैश्विक व्यवस्था का हिस्सा रहा है।[9] अतः

भारत की विदेश नीति को वैश्वीकरण के राजनीतिक आर्थिक एवं प्रौद्योगिकी दबावों के अनुसार ढालना चाहिये। उनका मानना था कि अर्थव्यवस्था के दबाव में ऋणात्मक परिणाम भी निकल सकते हैं अतः हमें संसाधनों के असमान भोग के खिलाफ कोशिश करनी चाहिये एवं उच्चभोगी समाजों की स्थापना को निरूत्साहित करना चाहिये।[10] नेहरू के समान उन्होंने भी असलग्नता पर बल दिया। उनका कहना था कि शीतयुद्धोत्तर परिस्थितियों में महाशक्तियों का होना अनिवार्य नहीं हैं। असंलग्नता का अर्थ अन्यायपूर्ण कारणों या शक्ति के अनुचित प्रयोग का प्रतिरोध करना है।[11] इसलिए उन्होंने निःशस्त्रीकरण पर बल दिया।

दक्षेस 1997 के माध्यम से भी विभिन्न देशों के विदेश मन्त्रियों से मुलाकात करके व्यापारिक सम्बन्धों को सुधारने की दिशा में अहम भूमिका निभाई। भारत व चीन के मध्य सीमा विवाद से उलझे प्रश्नों को सुलझाने का प्रयास चीन के राष्ट्रपति से समझौते द्वारा किया। बदलते अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश में भारत की विदेश नीति रूस, तथा अमेरिका के साथ संतुलित सटीक, स्पष्ट एवं लचीली ही रही।यदि उनकी भारतीय विदेश नीति का मूल्यांकन करे तो निरन्तरता ही देखने को मिलती हैं लेकिन भारतीय विदेश नीति में अपने सिद्धान्तों के द्वारा उन्होंने कुछ परिवर्तन लाकर आर्थिक क्षेत्र में भारत जहाँ विश्व आर्थिक मन्दी के दौर से गुजर रहा था उसमें विदेशी सम्बन्धों व व्यापार के माध्यम से सुधार लाने का प्रयास किया।

- **अटल बिहारी वाजपेयी सरकार काल में भारतीय विदेश नीति**

श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में भाजपा गठबन्धन सरकार ने 28 मार्च 1998 को लोकसभा में अपना बहुमत सिद्ध कर दिया।[12]

अटल बिहारी वाजपेयी के समय विदेश नीति में निरन्तरता व बदलाव दोनों को सम्मिश्रण दिखाई देता है जहाँ तक निरन्तरता का प्रश्न है, भारत के प्रधानमंत्री अनेक मंचों जैसे गुटनिरपेक्ष आन्दोलन, ळ.15 सार्क व आसियान में गुटनिरपेक्ष नीति की प्रासंगिकता उपयोगिता की वकालत करते रहे। चीन के साथ सीमा विवाद में अप्रैल 1998 में चीन के सेना अध्यक्ष ने भारत का दौरा किया श्री वाजपेयी ने निरन्तरता को बनाये रखा लेकिन भारतीय सुरक्षा के मुद्दे को अधिक महत्त्व देते हुए परमाणु नीति को एक नयी दिशा प्रदान की। 11 मई तथा 13 मई 1998 को कुल पाँच परमाणु परीक्षण किये वाजपेयी सरकार ने मिसाइल विकास कार्यक्रम को भी दृढ़ता से आगे बढ़ाते हुए, अग्नि–2 मिसाइल के साथ अन्य विभिन्न प्रकार के मिसाइलों के परीक्षण भी किये गये।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 19 फरवरी 1999 में पाकिस्तान से सम्बन्धों को सुधारने की दिशा में लाहोर की बस यात्रा की। तथा पाकिस्तान में प्रधानमंत्री श्री नवाज शरीफ के साथ लाहौर घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किए। परन्तु मई–जून 1999 में भारत पाक सम्बन्ध कारगिल युद्ध में उलझ गये रूस से सुखोई 30 विमानों की दूसरी खेप प्राप्त की गयी तथा सी.टी.वी.टी. पर हस्तारक्षर नहीं किये गये।[13] इसके साथ ही साथ 1 सितम्बर 2001 को अमेरिका पर हुए आतंवादी हमले को लेकर दोनों देशों क मध्य एक गहरी सूझ बूझ विकसित हुई।

वैश्विक मामलों में बढ़ते महत्त्व को ध्यानमें रखते हुए अमेरिका ने भारत के साथ सामाजिक सहयोग की शुरूआत की जो कि आगे 2004 जनवरी तक कायम रही। भारत के साथ परमाणु कार्यक्रम एवं उच्च तकनीकी व्यापार में सहयोग भी रहा। इस प्रकार पड़ौसी देशों के साथ मधुर सम्बन्धों की दिशा में कदम तो उठे लेकिन परमाणु परीक्षण से परिवर्तन दिखा।

- **मनमोहन सिंह कालीन भारत की विदेश नीति**

मई 2004 में जब यू. पी. ए. सरकार ने सत्ता सभाली तो मनमोहन सिहं प्रधानमंत्री बने। उनके समय विदेश नीति में कुछ परिवर्तन देखने को मिला। संयुक्त राज्य अमेरिका चीन, सिंगापुर, आसियान देश, रूस, पाकिस्तान आदि के साथ भारतीय सम्बन्धों का व्यापक विकास हुआ और कई महत्त्वपूर्ण विदेश नीतिगत निर्णय हमारे सामने आए। भारत ने जर्मनी, जापान और ब्राजील के साथ मिल कर जी–4 देशों का संगठन बनाया।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता की प्राप्ति के लिए संगठित प्रयास किए मनमोहन सिंह सरकार ने अमेरिका के साथ प्रतिरक्षा रचनात्मक समझौता किया। वर्ष (2006) में एक बड़ा विकास चार दशकों से अधिक समय के लिए बंद पडे व्यापार के लिए नाथुला दर्रा को फिर से खोल दिया। आतंकवाद के मामले पर मतभेदों के होते हुए भी भारत और पाकिस्तान के मध्य आर्थिक सम्बन्धों तथा व्यापारिक सम्बन्धों में एक नयी प्रगति देखने को मिली भारत अफगानिस्तान सम्बन्धों में काफी सुधार हुआ । प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने अपने पूर्ववती अटल बिहारी वाजपेयी की विदेश नीति की निरन्तरता को बनाए रखा।

- **यू. पी. ए. सरकार (मनमोहन सिंह) का द्वितीय कार्यकाल और भारत की विदेश नीति**

मनमोहन सिंह 22 मई 2009 पुनः प्रधानमंत्री बने। 24 नवम्बर, 2009 को भारतीय प्रधानमंत्री ने अमेरिकी यात्रा की भारतीय प्रधानमंत्री और अमेरिकी राष्ट्रपति के बीच में आतंकवाद और जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए आपसी सहयोग बढ़ाने पर सहमत हुए; असैन्य परमाणु सहयोग समझौते के लिए 2010 में राष्ट्रपति ओबामा के नेतृत्व में नाभिकीय सुरक्षा पर शिखर बैठक आयोजित की गयी जिसमें भारतीय प्रधानमंत्री ने भी शिरकत की।[14] भारत रूस के मध्य रक्षा क्षेत्र में सहयोग के लिए 2020 तक के लिए एक फ्रेमवर्क समझौते हुआ है इसमें दोनों देश रक्षा उपकरणों के निर्माण में साझेदारी करेंगे।प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने ळ.8 व ळ.5 की शिखर बैठको में भाग लेने के बाद लौटते वक्त मीडिया को कहा कि आप दोस्तों का चयन कर सकते हैं परन्तु पड़ौसियों का नही[15]। फिर भी प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने अपने शासनकाल में पूर्ववर्ती अटल बिहारी वाजपेयी की नीतियों का ही अनुसरण करते हुए निरन्तरता को एक ओर बनाए रखा वहीं प्रसिद्ध अर्थशास्त्री होने के नाते भारत के आर्थिक व व्यापारिक सम्बन्धों में बदलाव से परिवर्तन की दिशा में भी कदम बढ़ाये इस प्रकार निरन्तरता में परिवर्तन नजर आया।

- **प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सरकार के काल में भारत की विदेश नीति**

2014 में भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में श्री नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री बने। 26 मई, 2014 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने शपथग्रहण समारोह में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के अलावा सार्क के अन्य देशों के शासनाध्यक्षों एवं राष्ट्राध्यक्षों को निमन्त्रित करके यह सिद्ध किया कि उनकी सरकार की विदेश नीति की प्राथमिकता अपने पड़ौसी देशों विशेष रूप से सार्क देशों के साथ अपने एवं मधुर सम्बन्ध स्थापित करना है। भूटान व नेपाल की यात्रा भी इसी कड़ी का हिस्सा 3–4 अगस्त 2014 को नरेन्द्र मोदी द्वारा नेपाल यात्रा से भी द्विपक्षीय सम्बन्धों में विकास आया। साथ ही शरीफ के जन्म दिवस पर उन्हें बधाई देने पाकिस्तान पहुंचे ताकि सम्बन्धों में सुधार हो सकें लेकिन उरी व पठान कोट हमले ने सम्बन्धों में दोस्ती का हाथ जला दिया। इस हेतु जनवरी 2017 में भारत द्वारा सर्जिकल स्ट्राइक से पाकिस्तान की आतंगवादी घटनाओं के विरूद्ध करारा जवाब दिया।[16] भारत अमेरिकी संबंध मधुर ही है।भारत के उन्नत स्तर के लिए 'मेक इन इड़िया नीति' को चलाकर भारत की विदेश नीति में राष्ट्रीय हितों को उन्नत कर रहे हैं।

जब हम प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत की विदेश नीति के निर्धारण की बात करते हैं तो हमें निरन्तरता काफी हद तक नजर आती है भारत की विदेश नीति हमारे देश की आर्थिक स्थिति पर निर्भर करती है। इसकी विशेषता निरन्तरता है यदि हम भारत के इतिहास पर सरसरी निगाह डाले तो यह स्पष्ट होता है कि मात्र सरकारें बदलने से भारत की विदेश नीति की व्यापक रूपरेखा या ढांचे में कभी भी बहुत अधिक बदलाव नहीं आया है।ब्रिक्स देशों में भारत लड़खड़ा रहा था, लेकिन मोदी की सरकार के सत्ता में आने के बाद भारत विकास के मार्ग पर तेजी से आगे बढ़ रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय ऐजिन्सियों मूडीज और विश्व बैंक एक ही सुर अलाप रहे हैं कि भारत विश्व में तेजी से बढ़ रही अर्थव्यवस्था है। यह स्पष्ट उदाहरण मोदी द्वारा विभिन्न देशों की विदेश यात्राओं का ही परिणाम है कि उन्होंने अब तक उन देशों की भी यात्रा करके संबंधों व भारत के आर्थिक स्तर को ऊपर उठाया है जिनमें अब तक किसी भी प्रधानमंत्री ने पहले पहल नहीं की थी। मोदी सरकार की विदेश नीति एकदम नई तो नहीं कही जा सकती है उन्होंने यथार्थवादी नीति का अनुसरण किया है जो कुछ भी विभिन्न प्रधानमंत्रियों के काल में विदेश नीति रही उन पर अमल करके शक्ति के साथ पालन किया अर्थाथ निरन्तरता के साथ प्रधानमंत्री मोदी शासन काल में परिवर्तन यर्थाथवाद के रूप में स्पष्ट दिखाई देता है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अब तक के कार्यकाल में राष्ट्रीय स्तर पर तो देश को मजबूती दी ही है विश्व पटल पर भी भारत के गौरव को बढ़ाया है। जलवायु संकट पर दुनिया की राह दिखाना हो या कोविड के विरुद्ध भारत की लड़ाई का विश्व के लिए मिसाल बन ना इन सब ने विश्व पटल पर भारत की प्रतिष्ठा को बढ़ाया है। संयुक्त राष्ट्र समेत विश्व के अनेक देशों से मिला सम्मान विश्व में भारत की बढ़ती प्रतिष्ठा का घोतक है। इस शोध पत्र को प्रकाशित करवाने में आईसीएसएसआर, नई दिल्ली की भूमिका प्रमुख रही है। आईसीएसएसआर, नई दिल्ली का धन्यवाद।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अटल बिहारी वाजपेयी भारत की विदेशी नीति राजपाल एण्ड सन्ज नई दिल्ली 1979 पृ. 27
2. डॉ. आर.पी. जोशी, डॉ. अमिता अग्रवाल, अर्न्तराष्ट्रीय सम्बन्ध शील संसप्रकाशन जयपुर 1999 पृ. 280
3. जवाहर लाल नेहरू भारत की विदेश नीति चुनिन्दा भाषण सितम्बर 1946 अपैल 1961 प्रं. 402 अध्यक्ष बनाया गया। भारत ने हिन्द चीन में शान्ति स्थापित करने के लिए गम्भीर प्रयास किए। अन्ततोगत्वा 21 जुलाई 1954 को जेनेवा सम्मेलन में युद्ध विराम हुआ। यघपि भारत को इस सम्मेलन में नहीं बुलाया गया फिर भी भारतीय राजदूत वी. के. कृष्णन मेननने जेनेवा में उपस्थित रहकर हिन्द चीन की समस्याओं को सुलझाया।
4. के. पी. एस मेनन–मेमोरीज एण्ड म्यूजीयस पृ. 5–6
5. सिंह एल. पी. भारत की विदेश नीति साहनी पीरियड नई दिल्ली 1980
6. डॉ. बी. सिंह गहलोत भारतीय विदेश नीति, अर्जुन पब्लिशिग हाऊस नई दिल्ली 2016 पृ. 71
7. विदेश मंत्रालय वार्षिक रिपोर्ट 1983–84
8. प्रो. बी. एम. जैन अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ बकादमी जयपुर 2016 पृ. 295
9. विश्व मामले जनवारी मार्च 1998 जिल्द 2 क्र.1 पृ. 22
10. इबिड
11. इबिड पृ. 25
12. यू. आर. धई भारतीय विदेश नीति न्यू एकेडिमिक पब्लिशिंग कम्पनी माई हीरा गेट जालन्धर वर्ष 2004 पृ. 79
13. यू. आर. द्यई भारतीय विदेश नीति न्यू एकेडिमिक पब्लिशिंग कम्पनी माई हीरा गेट जालन्घर 2004 पृ. 80–81
14. जागरण वार्षिकी 2010 पृ. 30 पृ. 32
15. द हिन्दू जुलाई 12 2009 पृ.1
16. टाइम्स ऑफ इंड़िया जनवरी 2017

❖◆❖